International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 6.924 Volume 9, Issue 12, December 2022
Website- www.aarf.asia, **Email** : editoraarf@gmail.com

प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन

लाल बहादुर
शोधार्थी,शिक्षाशास्त्र,श्री वैंकटेश्वर वि0वि0 गजरौला, अमरोहा
डा0 भेद पाल गंगवार,
प्रोफेसर,शिक्षाशास्त्र,श्री वैंकटेश्वर वि0वि0 गजरौला, अमरोहा

सारांश

वर्तमान अध्ययन प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों पर व्यक्तित्व और संगठनात्मक वातावरण के संबंध में शिक्षण प्रभावशीलता के संबंध में आयोजित किया गया था। प्रस्तुत अध्ययन में यह पाया गया कि पुरुष एवं महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर है। पुरुष शिक्षकों की तुलना में महिला शिक्षक शिक्षण में अधिक प्रभावी पाई गई। वर्तमान अध्ययन से यह भी पता चला है कि प्राथमिक विद्यालय के पुरुष और महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व कारकों में महत्वपूर्ण अंतर है। महिला, स्व-वित्तपोषित और शहरी शिक्षक कुछ व्यक्तित्व कारकों पर भिन्न होते हैं और पुरुष, सरकारी और ग्रामीण प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की तुलना में बेहतर व्यक्तित्व पहलू होते हैं। जबकि पुरुष और महिला, स्व-वित्तपोषित और सरकारी और ग्रामीण और शहरी प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच कुछ व्यक्तित्व कारकों पर कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। व्यक्तित्व बच्चे के जन्म से शुरू होता है और उसकी मृत्यु तक जारी रहता है। मनुष्य समाज की बदलती परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढालकर जीता है। शिक्षा के महत्वपूर्ण लक्ष्यों में से एक व्यक्ति को बेहतर ढंग से अनुकूलित करने में मदद करना है, जिससे व्यक्ति को खुशी मिलती है।

मुख्यशब्द: संगठनात्मक वातावरण, महिला शिक्षक, परिस्थितियों, अनुकूलित, प्रभावशीलता

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

प्रस्तावना

एक शिक्षक देश को नेतृत्व प्रदान करने और भविष्य के लिए मानव व्यक्तित्व को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक बच्चे का व्यक्तित्व और योग्यता उसके शिक्षक के व्यक्तित्व और शिक्षण के कौशल से अत्यधिक प्रभावित होती है। यानी शिक्षक ही राष्ट्रीय निर्माता हैं और आज के छात्र ही राष्ट्रीय निर्माता होंगे। प्रत्येक बच्चे को विवेकपूर्ण तरीके से अपने कौशल को विकसित करने का अवसर दिया जाना चाहिए। मानवता के विकास के साथ हमारे देश का कल्याण कुछ रचनात्मक और कल्पनाशील व्यक्तियों पर निर्भर करता है, जिन्हें 'शिक्षक' कहा जाता है। यह देखा गया है कि किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व और योग्यता उसके समाज या स्कूल के वातावरण के वातावरण से प्रभावित होती है। यह आम राय है कि सरकारी और निजी स्कूल के शिक्षकों के व्यक्तित्व और शिक्षण प्रभावशीलता के बीच काफी अंतर है। निजी स्कूल के शिक्षकों को सहकारी, उत्कृष्ट सौहार्दपूर्ण और मददगार माना जाता है। वहीं दूसरी ओर सरकारी स्कूल के अधिकतर शिक्षक आरक्षित, शर्मीले और आज्ञाकारी हैं लेकिन स्थिति उलटी भी पाई जाती है। यह भी देखा गया है कि कुछ निजी स्कूल के शिक्षक बहुत ईर्ष्यालु, तनावग्रस्त और अस्थिर व्यक्तित्व वाले पाए जाते हैं। इन सभी लक्षणों का संयोजन व्यक्तित्व को आकार देता है और व्यक्ति की योग्यता का निर्माण करता है।

शैक्षिक प्रौद्योगिकी की प्रगति के साथ यह देखा गया है कि शिक्षण सीखने की प्रक्रिया अधिक उपलब्धि उन्मुख और प्रभावी हो गई है। बेहतर शिक्षक पैदा करना संविदात्मक साबित हुआ है। अच्छे शिक्षक हमेशा अपने छात्रों से सम्मान मांगने के बजाय सम्मान का आदेश देते हैं। यह देखा गया है कि शिक्षक, जो कुछ कौशल का उपयोग करके कक्षा में बातचीत में प्रभावी ढंग से संवाद कर सकते हैं, छात्रों द्वारा उनका सम्मान किया जाता है क्योंकि उनके शिक्षण में मदद मिलती है जो छात्रों के भविष्य को उपलब्धि उन्मुख और आकार देती है। छात्रों का उद्देश्य बेहतर भविष्य की उम्मीद में स्कूल स्तर पर कक्षाओं में भाग लेना है। यह भी कहा जाता है कि कक्षा से ही राष्ट्र का भाग्य बनता है। अच्छे शिक्षकों की अपेक्षा की जाती है। राष्ट्र निर्माण

के लिए प्रभावी शिक्षण के माध्यम से अपने छात्रों के बीच मानवीय मूल्यों, व्यक्तित्व को विकसित करने के तरीके। जमैका में 'लेविस एंड एंडरसन' द्वारा किए गए एक शोध ने शिक्षा और सीखने के बीच एक उच्च संबंध का खुलासा किया। यह संदेह से परे साबित हुआ है कि बेहतर शिक्षा और बेहतर शिक्षा और समझ के साथ बेहतर इंसान बनाने और राष्ट्र को बेहतर बनाने के लिए बेहतर शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है।

शिक्षण प्रभावशीलता

शिक्षण प्रभावशीलता से तात्पर्य है कि एक शिक्षक कक्षा में शिक्षण के कार्य को किस प्रकार मुख्य रूप से करता है। मेडले द्वारा शिक्षण प्रभावशीलता और शिक्षक प्रभावशीलता के बीच अंतर को सामने लाया गया है। उनका सुझाव है कि शिक्षक की प्रभावशीलता को केवल विद्यार्थियों के व्यवहार के संदर्भ में परिभाषित और मूल्यांकन किया जाना है, न कि शिक्षकों के।

यहां चर्चा की गई प्रभावी शिक्षण की अवधारणा अलग-अलग तरीकों से भिन्न है। यह शिक्षण से सीखने के लिए गुणात्मक बदलाव का प्रतिनिधित्व करता है। पारंपरिक मान्यता यह है कि छात्र स्कूली पाठ्यक्रम तभी सीखते हैं जब शिक्षक पढ़ाते हैं। सीखने के अन्य संसाधनों को हमेशा पीछे की अवस्था में रखा गया है। शिक्षण से अधिगम पर अपना ध्यान केन्द्रित करना यह मानता है कि छात्र कई तरीकों से और विभिन्न अधिगम संसाधनों से सीखते हैं। समूह की जरूरतों के साथ-साथ व्यक्तिगत जरूरतों को पूरा किया जाता है। बदलते परिदृश्य में छात्र अपने आप में एक सीखने का संसाधन है।

प्रभावी शिक्षण की उभरती अवधारणा के अनुसार सहपाठियों की परस्पर क्रिया और सीखने के संसाधन के रूप में साथियों के उपयोग की भी जांच की जाती है। ये सभी इंटरैक्शन कई तरह के रूप लेते हैं। सीखने की गतिशीलता में स्कूल और कक्षा के वातावरण द्वारा निर्मित सीखने का माहौल शामिल है। सीखने की प्रक्रिया बहुआयामी क्रिया है और वही शिक्षण है। वास्तव में एक प्रभावी शिक्षण के ढांचे में प्रत्येक घटक की अपनी गतिशील प्रक्रिया होती है। इस प्रक्रिया को यहां नहीं बताया जा रहा है। अवधारणात्मक गायन के लिए

प्रभावी शिक्षण में जांच की सहायक धाराएं आवश्यक थीं और परिभाषित करने के लिए आवश्यक प्रक्रिया की मात्रा के संदर्भ में परिभाषित किए जाने वाले शिक्षण प्रयासों की प्रभावशीलता, एक छात्र परिभाषित उद्देश्य की उपलब्धि के लिए करता है। वह प्रक्रिया, जिसके माध्यम से शिक्षण के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए प्रगति प्राप्त की जाती है, उद्देश्यों, सीखने के माहौल और महत्वपूर्ण व्यक्ति, जैसे शिक्षक, साथियों और स्वयं के परस्पर प्रभाव के माध्यम से पारस्परिक बातचीत की विशेषता है, जिससे झुकाव कार्य में प्रगति प्राप्त होती है। यह शिक्षक प्रभावशीलता जांच से अलग है जिसका दायरा कम है। शिक्षक प्रभावशीलता, जिसमें शिक्षक गुण और शिक्षक प्रशिक्षण प्रक्रिया शामिल है, जो चयन और शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में आती है। एक प्रभावी शिक्षण, तथापि, अधिगम वातावरण में शिक्षक के प्रदर्शन से अधिक संबंधित है। सीखने के मनोविज्ञान का जोर सीखने की प्रक्रिया और परिस्थितियों को विकसित करने पर आधारित है। एक प्रभावी शिक्षण स्पष्ट रूप से एक इंटरैक्टिव और एकीकृत राष्ट्र है। इस खंड में शिक्षण की एकीकृत प्रकृति की अवधारणा की गई है।

शिक्षण प्रभावशीलता की परिभाषाएं

एक "प्रभावी शिक्षक वह अच्छा व्यक्ति होता है जो एक अच्छे नागरिक, अच्छे माता-पिता और अच्छे कर्मचारी के लिए आदर्श समुदाय को पूरा करता है। उनसे ईमानदार, मेहनती, उदार, मैत्रीपूर्ण और विचारशील होने की उम्मीद की जाती है, और आधिकारिक, संगठित, अनुशासित, व्यावहारिक और समर्पित होकर अपनी कक्षाओं में इन गुणों को प्रदर्शित करने की अपेक्षा की जाती है। हालांकि, इस परिभाषा में स्पष्ट उद्देश्य मानकों या प्रदर्शन का अभाव है।" एंडरसन (1991) ने कहा कि "……एक प्रभावी शिक्षक वह होता है जो लगातार उन लक्ष्यों को प्राप्त करता है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अपने छात्रों के सीखने पर केंद्रित होते हैं।" डंकिन (1997) ने माना कि "शिक्षक प्रभावशीलता उस डिग्री का मामला है जिस तक एक शिक्षक छात्रों पर वांछित प्रभाव प्राप्त करता है। उन्होंने शिक्षक की क्षमता को उस सीमा के रूप में परिभाषित किया है

जिसमें शिक्षक के पास आवश्यक ज्ञान और कौशल है, और शिक्षक का प्रदर्शन जिस तरह से शिक्षक शिक्षण की प्रक्रिया में व्यवहार करता है। ”

व्यक्तित्व

व्यक्तित्व का अर्थ:

व्यक्तित्व शब्द की उत्पत्ति लैटिन क्रिया 'पर्सोना' में हुई है जिसका अर्थ है 'ध्वनि के माध्यम से'। इस शब्द का इस्तेमाल एक अभिनेता की आवाज का वर्णन करने के लिए किया जाता था जो एक मुखौटा के माध्यम से बोलता था। रोमन काल के दौरान व्यक्तित्व को 'व्यक्ति जैसा प्रतीत होता है' का गठन माना जाता था। ऑलपोर्ट (1937) ने साहित्य के एक विस्तृत सर्वेक्षण के बाद पाया कि उस समय तक व्यक्तित्व शब्द का इस्तेमाल पचास अलग-अलग तरीकों से किया जा चुका था। व्यक्तित्व शब्द लैटिन शब्द 'व्यक्तित्व' से आया है जिसका अर्थ है मुखौटा। प्राचीन ग्रीस में थिएटर में खिलाड़ी अपने चेहरे पर मास्क लगाते थे। मास्क को 'व्यक्तित्व' कहा जाता था क्योंकि खिलाड़ी इसके माध्यम से बात करते थे। बाद में व्यक्तित्व का उपयोग अभिनेताओं और सामान्य रूप से व्यक्तियों के लिए किया गया था। गिलफोर्ड का कहना है कि व्यक्तियों के लिए व्यक्तित्व का उपयोग शेक्सपियर ने जो लिखा है उससे प्रभावित हो सकता है "सभी शब्द एक मंच और सभी पुरुष और महिलाएं केवल खिलाड़ी।" व्यक्तित्व को एकीकरण माना जाता है और यह किसी की विशेषताओं के संगठन का पैटर्न है। 1934 में, व्यक्तित्व को (वॉरेन डिक्शनरी से) परिभाषित किया गया था, "……..एक व्यक्ति के सभी संज्ञानात्मक, भावात्मक और शारीरिक विशेषताओं का एकीकृत संगठन क्योंकि यह दूसरों से फोकल दूरी में खुद को प्रकट करता है।" ऑलपोर्ट (1961) ने अपनी परिभाषाओं में व्यक्तित्व लक्षणों की गहराई से जांच की है। उन्होंने लगभग आधा सौ परिभाषाओं की समीक्षा की है। इन सभी परिभाषाओं का समालोचनात्मक परीक्षण करने के बाद उन्होंने इन परिभाषाओं को विशिष्ट में वर्गीकृत किया है। कुछ परिभाषाएँ दूसरी ओर मनोवैज्ञानिक को संदर्भित करती हैं, ये व्यक्तित्व के समाजशास्त्रीय

अर्थों के लिए हैं। ऑलपोर्ट (1961) के अनुसार, व्यक्तित्व की परिभाषा ने पिछली सभी परिभाषाओं के गुणों को शामिल करने का प्रयास किया है और उन सभी को जोड़ने की कोशिश की है जो पहले से ही इन परिभाषाओं के विचारकों के ध्यान से बच गए थे।

ऑलपोर्ट (1961) के अनुसार, "व्यक्तित्व उन मनोवैज्ञानिक प्रणालियों के भीतर एक गतिशील संगठन है जो उसके पर्यावरण के लिए अद्वितीय समायोजन निर्धारित करता है।" इस परिभाषा के कुछ भाग ध्यान देने योग्य हैं, "व्यक्तित्व एक गतिशील संगठन है जो इस तथ्य पर केंद्रित है कि व्यक्तित्व लगातार बदल रहा है और विकसित हो रहा है। साथ ही यह एक ऐसा संगठन है जो व्यक्तित्व के विभिन्न अंगों को एक साथ रखता है। मनोवैज्ञानिक शब्द हमें याद दिलाता है कि व्यक्तित्व न तो पूरी तरह से मनोवैज्ञानिक है और न ही पूरी तरह से तंत्रिका। यह मन और शरीर दोनों का एक संयोजन है जो एक ही एकता में मौजूद है। 'निर्धारण' शब्द उस व्यक्तित्व को दर्शाता है जो कुछ निश्चित प्रवृत्तियों का परिणाम है, झूठ एक व्यक्ति के भीतर होता है और उसके व्यवहार को सीधे नियंत्रित करता है। यह बिल्कुल भी नहीं मानता है कि ऑलपोर्ट की व्यक्तित्व की परिभाषा न तो काल्पनिक निर्माण है और न ही व्यक्तियों का समूह। यह एक वास्तविक अस्तित्व है और इसमें प्राकृतिक और मनोवैज्ञानिक घटक शामिल हैं, इसलिए परिभाषाएँ व्यक्ति की विशिष्टता पर केंद्रित हैं। यह बायोस है कि कोई भी दो व्यक्ति, समान समायोजन नहीं करते हैं, एक ही वातावरण है। ऑलपोर्ट का मानना है कि यह व्यक्तित्व है, जो व्यक्ति और उसके शारीरिक और मनोवैज्ञानिक वातावरण के बीच दवा करता है।

कुछ समय बाद ऑलपोर्ट (1961) ने अपनी परिभाषा को संशोधित किया, संशोधित परिभाषा है, "व्यक्तित्व उन मनोवैज्ञानिक प्रणालियों के भीतर गतिशील संगठन है जो उसके विशिष्ट व्यवहार और विचार को निर्धारित करते हैं।" पिछली परिभाषाओं के 'अद्वितीय' शब्द को 'विशेषता' शब्द से बदल दिया गया है। इस संदर्भ में, सभी व्यवहार और विचार व्यक्ति के लक्षण हैं। यहां तक कि जिन कृत्यों और अवधारणाओं के बारे

में हम अपनी समीक्षाओं का आदान-प्रदान दूसरों के साथ करते हैं। उनकी परिभाषाओं में प्रमुख शब्दों के विश्लेषण से तनाव की डिग्री पर व्यापक दृष्टिकोण प्रकट होने की उम्मीद है, सभी पोर्ट प्रेरणा पर रखे गए हैं।

व्यक्तित्व की परिभाषाएँ:

मुआन के अनुसार, "व्यक्तित्व को किसी व्यक्ति की संरचना, व्यवहार के तरीके, रुचियों, दृष्टिकोण, क्षमताओं, क्षमताओं और योग्यता के विशिष्ट एकीकरण के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।"

डेहेल के अनुसार, "एक व्यक्ति का व्यक्तित्व उसके संगठित व्यवहार की कुल तस्वीर है, विशेष रूप से क्योंकि यह उसके साथी पुरुषों द्वारा सुसंगत तरीके से चित्रित किया जा सकता है।"

वाटसन के अनुसार, "हमारा व्यक्तित्व इस प्रकार का परिणाम है कि हम क्या शुरू करते हैं और हम क्या जीते हैं। यह समग्र रूप से प्रतिक्रिया द्रव्यमान है।"

कैटेल के अनुसार, "व्यक्तित्व वह है जो भविष्यवाणी की अनुमति देता है कि एक व्यक्ति किसी विशेष स्थिति में क्या करेगा।" मर्फी के अनुसार, "एक अच्छे व्यक्तित्व का अर्थ है समायोजन और पर्यावरण की शक्ति।"

ईसेनेक के अनुसार, "व्यक्तित्व किसी व्यक्ति के चरित्र, स्वभाव, बुद्धि और शरीर का कमोबेश स्थिर और स्थायी संगठन है जो पर्यावरण के लिए उसके अद्वितीय समायोजन को निर्धारित करता है।"

जेपी गिलफोर्ड के अनुसार, "व्यक्तित्व एक व्यक्ति के लक्षणों का अनूठा पैटर्न है। एक विशेषता कोई भी विशिष्ट, अपेक्षाकृत स्थायी तरीका है जिसमें एक व्यक्ति दूसरे से भिन्न होता है।"

कैटेल के अनुसार, "व्यक्तित्व जो भविष्यवाणी की अनुमति देता है कि कोई व्यक्ति किसी दिए गए स्टेशन में क्या करेगा।"

फ्रेडेनबर्ग के अनुसार, "व्यक्तित्व और समायोजन के मनोविज्ञान ने एक ही परिभाषा में विभिन्न परिभाषाओं को संक्षेप में प्रस्तुत करने की कोशिश की, जो इस प्रकार चलती है, व्यक्तित्व जटिल विशेषताओं की एक स्थिर प्रणाली है जिसके द्वारा व्यक्ति के जीवन पैटर्न की पहचान की जा सकती है।"

ऑलपोर्ट (1961) के अनुसार, जिन्होंने अपना अधिकांश समय व्यक्तित्व पर शोध के लिए समर्पित किया, "व्यक्तित्व उन मनोभौतिक प्रणालियों के व्यक्ति के भीतर गतिशील संगठन है जो उसके पर्यावरण के अद्वितीय समायोजन को निर्धारित करता है।"

इस सन्दर्भ में व्यक्तित्व को परिभाषित करने के लिए अलग-अलग उपागम बनाए गए हैं, लेकिन व्यक्तित्व की किसी एक परिभाषा पर कोई सहमति नहीं है। ऐसा माना जाता है कि अलग-अलग दृष्टिकोण हैं, लेकिन फिर भी सभी मनोवैज्ञानिक विशिष्ट सामान्य प्राथमिक विशेषताओं पर सहमत हैं। एक मौलिक चरित्र जो छिपा है वह यह है कि व्यक्तित्व अद्वितीय है। ऐसे दो व्यक्ति नहीं हैं, समान जुड़वां भी नहीं, जिनका व्यक्तित्व समान है। दूसरे, व्यक्तित्व का मुख्य तथ्य यह है कि यह उसके स्वयं के कामकाज का उत्पाद है। आज हम जो करते हैं वह हमारे संचित अनुभव पर निर्भर करता है। अनुभव जमा होते हैं; अंतर के लिए, लगातार अवधि बाहरी वातावरण के साथ निरंतर बातचीत के माध्यम से हमारे व्यक्तित्व को आकार देती है, जिसका सामना हम तीसरे, अधिक केंद्रित परिभाषाओं की सामान्य विशेषताओं और व्यक्तिगत अंतर के अर्थ को समझने की आवश्यकता से करते हैं। व्यक्तित्व ही व्यक्ति को विशिष्ट बनाता है। व्यक्ति को सटीक तरीके से अलग करने के लिए मुखर व्यक्तित्व अध्ययन उपयोगी हो सकता है।

व्यक्तित्व की प्रकृति:

व्यक्तित्व की प्रकृति की चर्चा इसकी संरचनात्मक और कार्यात्मक विशेषताओं की व्याख्या में प्रयुक्त कुछ प्रमुख शब्दों के संदर्भ में की जा सकती है। इसकी प्रकृति को प्रस्तुत करने का सारांश निम्नलिखित है।

1. व्यक्तित्व भागों के योग के बजाय एक संपूर्ण है। इसका मतलब यह नहीं है कि काया प्लस बुद्धि स्वभाव के साथ चरित्र और किसी व्यक्ति की सामाजिकता के साथ। यह व्यक्तित्व का निर्माण करता है। कुल मिलाकर, ये सभी तत्व एक साथ मिलकर परिणाम को एकसमान रूप से कार्य करते हैं, जो व्यक्तित्व को परम बनाता है। यह एक ऐसी कार की तरह है जो यंत्रवत् रूप से आपस में जुडी हुई है जो इसे अपना कार्य करने में सक्षम नहीं बनाती है; व्यक्तित्व के विभिन्न अवयवों के साथ भी ऐसा ही है।

2. व्यक्तित्व विभिन्न लक्षणों के एकीकरण का एक संयुक्त रूप है। अंततः व्यक्तित्व संरचना के हिस्से के रूप में पहचाने जाने वाले ये सभी तत्व एक साथ इकट्ठे होने के बजाय एकीकृत हो जाते हैं। इसलिए, विभिन्न लक्षणों के एकीकरण के परिणामस्वरूप एक अलग संपूर्णता बन गई, जिसे व्यक्ति के व्यक्तित्व की प्रकृति के रूप में जाना जाता है।

निष्कर्ष

दुनिया के शैक्षिक योजनाकारों और अर्थशास्त्रियों ने भावनात्मक रूप से संतुलित शिक्षकों के माध्यम से शिक्षा पर निवेश के महत्व को स्वीकार किया है, जिनका व्यक्तित्व और संगठनात्मक वातावरण उनके छात्रों के जीवन को बदलने के कार्यों को क्रियान्वित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सभी के लिए शिक्षा पर विश्व घोषणा, ताकि बच्चों की बुनियादी जरूरतों को प्रभावी तरीके से पूरा किया जा सके। प्राथमिक शिक्षा को एक आवश्यक शिक्षण उपकरण और बुनियादी शिक्षा के रूप में परिभाषित किया गया है जिसमें स्वयं जीवित रहने के लिए आवश्यक लोग शामिल हैं, सम्मान के साथ जीने और काम करने के लिए, निर्णयों को स्वीकार करने के लिए जीवन में गुणवत्ता में सुधार करने के लिए, और सीखने के लिए जारी रखने के लिए गुणवत्ता शिक्षा के कुछ गड्ढों से पीड़ित रहा है सभी के लिए शिक्षा बहुत अच्छी है, सभी के लिए गुणात्मक शिक्षा एक और कहानी है। शैक्षिक अनुसंधान में, समस्या का चयन आम तौर पर शिक्षा के क्षेत्र में सुधार की गुंजाइश पर निर्भर करता है, लेकिन समस्या का चयन किया गया था, शैक्षणिक और साथ ही

शिक्षा पक्ष पर सुधार के लिए प्रभाव होना चाहिए। वर्तमान अध्ययन व्यक्तित्व और संगठनात्मक वातावरण के संबंध में शिक्षण प्रभावशीलता से संबंधित था। प्रभावशीलता एक व्यापक आविष्कार है जिसे शिक्षकों की धारणाओं के साथ पहचाना जाना चाहिए और यह समय के साथ विभिन्न संस्थागत और व्यक्तिगत सेटिंग्स में कैसे भिन्न होता है, और मूल्य वर्धित छात्रों को प्राप्त करने के मामले में समान संदर्भों में अन्य शिक्षकों की तुलना में।वर्तमान अध्ययन से पता चला है कि महिला शिक्षक, स्व-वित्तपोषित प्राथमिक विद्यालयों में पढ़ाने वाली शिक्षक और शहरी क्षेत्रों के शिक्षक अपने समकक्षों, पुरुष, सरकारी और ग्रामीण प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की तुलना में शिक्षण प्रभावशीलता में बेहतर पाए गए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

वांगू (2019) । व्यक्तित्व और आवश्यक उच्च रक्तचाप के बीच संबंध। इंडियन साइकोलॉजिकल रिव्यू, 46(3-4), 50-56।

सुब्बारायण (2015)। शैक्षिक मनोविज्ञान और मार्गदर्शन में मापन और मूल्यांकन न्यूयॉर्क। होल्ट राइनहार्ट और विंस्टन प्रा। लिमिटेड

अग्रवाल (2016) ओयो स्टेट, नाइजीरिया के ओयो साउथ सिनेटोरियल डिस्ट्रिक्ट में पब्लिक सेकेंडरी स्कूल टीचर्स के जॉब परफॉर्मेंस पर व्यक्तित्व लक्षणों और कार्य प्रतिबद्धता का प्रभाव। ग्रामीण विकास, पर्यावरण और स्वास्थ्य अनुसंधान की अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका, 1(1), 68-79.

नेविल बेनेट (2018)। शिक्षक की शिक्षा। द थर्ड इंडियन ईयर बुक ऑफ एजुकेशन, नई दिल्ली: एनसीईआरटी।

सिंह (2015)। शिक्षकों की गुणवत्ता। इलाहाबाद, अमिताभ प्रकाशन। अडवाल, एस.बी. (1976)। शिक्षक शिक्षा समस्याएं और संभावनाएं, नई दिल्ली: एनसीईआरटी।

कुमार (2016)। शिक्षा में अनुसंधान के चौथे सर्वेक्षण में एम.बी. बुच (1983-88) एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली।

सुंदरराजन और श्रीनिवासन (2017))। औद्योगिक संगठन पर संगठन की जलवायु का एक अनुदैर्ध्य अध्ययन। इंडियन साइकोलॉजिकल रिव्यू, 54 (3) 125-128।

सिंह (2018)। माता-पिता के प्रोत्साहन का विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास पर प्रभाव का अध्ययन। एम बी बुच (एड।) में, शिक्षा में अनुसंधान का चौथा सर्वेक्षण, नई दिल्ली, एनसीईआरटी, 332।

राव (2015) । एम.बी. द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान के 5वें सर्वेक्षण में प्राथमिक स्तर की महिला शिक्षकों के संदर्भ में अधिक प्रभावी और कम प्रभावी शिक्षकों की समायोजन समस्याओं और उनसे संबंधित कारकों का अध्ययन। बुच (1988-1992) एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।

वसंती और आनंदी (2017) । शैक्षिक मनोविज्ञान की अनिवार्यता नई। दिल्ली, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा. लिमिटेड